23-8-68 ओम शान्तिः प्रातः क्लास

रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते है। बाप को भी मजा आता हैं। तुम बच्चो को पवित्र बनाने में। इसलिये ही कहते है कि पतितपावन बाप को याद करो। सब का सदगति दाता वो एक ही है। और कोई है नही। यह भी तुम्ही समझते हो कि अब घर जाना है जरूर। पुरुषार्थ जरूरी कराने लिये बाप कहते है कि याद की यात्रा जरूरी है। याद से ही पावन बनेगे। फिर आगे है-पढ़ाई। पहले तो अल्फ बाप को याद करो। पीछे है बादशाही। जिसके लिये ही तुमको डायरेक्शन देते है। तुम जानते हो कि हमने 84 जन्म कैसे लिये है। तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनना है। सीढ़ी भी उतरना होता है नां। अब फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यूं भी हम तो बेहद के बाप के बच्चे है। बाप ईश्वर पवित्र है। सतयुग है पावन दुनियां। वहां पर तो एक भी पतित नही होता। सतयुग मे यह बाते होती नही। तो मूल बात ही है पावन बनने की। अब पवित्र बनो तो ही नई पावन दुनियां मे आने के लायक बनो। सबको पावन बनना ही है। वहां पतित होते नही। जो अभी सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करते है वो ही सतोप्रधान दुनियां का मालिक बनेगे। मूल बात ही एक है कि बाप को याद करके सतोप्रधान बनना है। बाप को जरूरी मेहनत नही देते है। सिर्फ कहते है कि अपने को आत्मा समझो। बार-2 कहते है तो पहले यही सबक पक्का करो। हम देह नही हम तो आत्मा है। बस। बडे आदमी जरूरी नही पढ़ाते है। दो अक्षरो मे ही सारा समझा देते है। बडे आदमी को तकलीफ नही दी जाती है। यह भी तुम जानते हो कि सतोप्रधानसे तमोप्रधान बनने मे भी कितने जन्म लग गये है। 63 जन्म नही कहेंगे। 84 जन्म लगे है सतोप्रधान से तमोप्रधान मे आने पर। यह तो निश्चय है नां कि हम सतोप्रधान थे? स्वर्ग के वासी अर्थात सुख के धाम के मालिक थे। सुखधाम था जिसको ही आदीसनातन देवी देवता धर्म कहा जाता है। थे तो तब भी मनुष्य सिर्फ दैवी गुणो वाले थे। इस समय हो आसुरी गुणो वाले मनुष्य। यह तो शास्त्रो मे दुक्का मार दिया है कि देवताओं और आसुरो की आपस मे लडाई लगी। तब ही देवताओं का राज्य स्थापन हुआ। यह तो बाप समझाते है कि तुम पहले-2 ऐसे थे। बापने आकर ब्राह्मण बनाये। ब्राह्मण से फिर देवता बनने की युक्ति बताई है। बाकी देवताओं और असुरो की लडाई की तो कोई बात ही नही है। देवताओं के लिये कहा जाता है अहिंसा परमोधर्म। तो वो कबभी लडाई थोडेई करेगे। हिंसा की तो बात भी हो नही सकती। सतयुग, दैवी राज्य फिर लडाई कहां से आई? सतयुगी देवतायें असुरो के पास आकर लडेगा वां असुर ही जाकर लडेगे? हो ही नही सकता। यह है पुरानी दुनियां। वो नई दुनियां फिर लडाई हो ही कैसे सकती है। भक्ति मार्ग मे तो मनुष्य जो भी सुनते है तो सत्य-2 करते रहते है। अभी तुम तो कोई भी शास्त्रो की बाते ही सुनते नही हो। गीता भी नही सुनते हो। आगे तो सुनते थे सुनाते थे। गीता सुनने के लिये मनुष्य कितने ढेर के ढेर जाते थे। बाप कहते है कि इनमे तो कोई बुद्धी ही नही। बिलकुल ही पत्थर बुद्धी है। कलयुग मे तो सब के सब पत्थर बुद्धी है। सतयुग मे तो सभी के सभी पारस बुद्धी कहलायेंगे। राज्य ही है पारस नाथ का। यहां तो राज्य है नही। करके राजाये थे भी तो अपवित्र थे। भल रत्न जडित ताज था परन्तु लाईट का नही। लाईट अर्थात पवित्रता नही थी। वहां पवित्र थे सभी। परन्तु इसका मतलब यह नही है कि कोई लाईट का ताज ऐसे ऊपर मे खडा रहता है। नही। यह तो चित्र मे पवित्रता की निशानी दिखाई जाती है। बाकी ऐसे लाईट कोई होती नही है। लाईट दिखाई नही पड़ती है। इस समय तुम भी पवित्र बनते हो। तुम्हारी लाईट कहां है यह तो सिर्फ पवित्रता की निशानी है। अभी तुम पवित्र बनते हो तो तुम्हारे पर कोई लाईट का ताज थोडो है। आत्मा जान्ता है कि हम बाप से योग रख कर पवित्र बनते है। वहां विकार का नाम नही। विकारी रावण राज्य ही खत्म हो जाता है। सतयुग मे रावण का राज्य होता नही। यहां तो रावण दिखाते है सिध करने के लिये कि रावण का यहां पर राज्य है। हर साल रावण को जलाते है। परन्तु जलता ही नही है। जब तुम रावण पर जीत पा लोगेतो रावण होगा ही नही। तुम हो अहिंसक तुम्हारी विजय तो योगबल से होती है। याद की यात्रा से ही हमारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होते है यह भी तुम जानते हो जन्म-जन्मान्तर कब से?

विकर्म कम शुरू होते है। पहले तो तुम आ० स० दे० धर्म वाले ही आते हो। सूर्यवंशी है 16कला सम्पूर्ण। फिर चन्द्रवंशी मे दो कला कम हो जाती है। फिर धीरे2 कला कम होती जाती है। अभी मूल बात तो है कि बाप को याद कर सतोप्रधान बनना है। जैसे ही कल्प पहले भी सतोप्रधान बने थे। वो ही सतोप्रधान बनेंगे। आते रहेंगे सतोप्रधान वाले सतोप्रधान बनते है। सतो वाले सतो मे ही रह जाते है। नम्बरवार तो होते है नां। फिर ड्रामा जैसे आये है वैसे ही आवेंगे। आकर जन्म लेंगे। ड्रामा कितना विचित्र बनाहुआ है। इसको जानने लिये भी तो समझना चाहिये नां। पत्थर बुधी समझ नही सकते है। पत्थर बुधी माना ही मोटी बुधी। पारस बुधी ही महीन बुधी होते है। बाप कितनी अच्छी रीती समझाते है। जैसे तुम नीचे उतरते आये हो वैसे ही अब चढ़ना है। समय तो पडा है। नम्बरवार ही पास होंगे फिर नम्बरवार ही उतरेंगे। तुम्हारी रेस, आश है सतोप्रधान बनने की। सभी तो फेल पास नही होते है। 100नम्बरों से फिर कम होते2 जाते है। यह भी सतोप्रधान है फेल पास। फिर भी नम्बरवार ही होते है। इसलिये ही बहुत पुरुषार्थ करना है। इस पुरुषार्थ मे ही फेल होते है। सर्विस करनी तो सह है नां। म्यूजियम मे किस रीती पढ़ाते है हर एक की पढ़ाई का पता पड जाता है। हेड टीचर देखेगी कि यह तो ठीक नही समझाती है तो फिर खुद जाकर समझावेगी। मदद आकर करेगी। एक दो गाड रखे जाते है जो देखते है कि ठीक तरह से समझाती है? कोई भी कुछ पूछता है तो मुंझती तो नही है। यह भी समझते है कि सेन्टर की सर्विस से प्रदर्शनी मे सर्विस अच्छी होती है। प्रदर्शनी से फिर म्यूजियम मे अच्छी सर्विस होती है। म्यूजियम तो अच्छी तरह से अपना शो करता है। फिर जो देख कर जाते है वो औरों को सुनाते रहेंगे। यह तो पिछाडी तक ही चलता रहेगा। यह म्यूजियम नाम भी बदलेगा। गाड फादरली वर्ल्ड-यूनिवरसिटी अक्षर अच्छा है। इसमे मनुष्य का तो नाम ही नही। इसका उदघाटन कौन करता है? बाप ने किया है। तुम किसी बडे आदमी से कराते हो तो बडे नाम से बहुत आवेंगे। एक के पीछे ढेर आ जाते है। इसलिये ही बाबा ने देहली मे लिखा है कि बड़े-2 आदमियों के जो ओपिनयन है सो छपवाओ। तो मनुष्य देखे। तो समझे भी कि इनके पास बड़े-2 आदमी आ जाते है। यह तो बहुत अच्छा ओपिनयन देते है। तो यह छपाना अच्छा है। इसमे और तो कोई भी जादु आदि की बात ही नही है। इसलिये ही बाबा लिखते रहते है कि ओपीनियन का किताब छपाओ। यहां पर भी बांटना चाहिये। तुम्हारे जो दुश्मन है उनको तो जरूर देना चाहिये। मनुष्य बाते तो बहुत ही बनाते है नां। आगे तो व्यास की कथा भी रजोगुणी कहेंगे। उस समय बैठ शास्त्र बनाये है। रजोगुणी मनुष्य ने भी बैठ इतने झूठ के शास्त्र बनाये है तो तमोप्रधान मनुष्य क्या नही झूठ बना सकते है। दिन प्रति दिन गाया जाता है झूठी माया.... इसमे ही सब आ जाता है। बहुत है जो कहते है कि यह रावण का राज्य है राक्षस राज्य है। पहले तो जिनका राज्य है उनको ही खयाल आना चाहिये। परन्तु नही क्योंकि यह सचमुच है इसलिये ही वो कोई भी कदम उठा नही सकते है। कब2 कोई2 बात मे कदम उठा लेते है यह तो अपने को आपही कहते है कि हे भगवानपतितों को आकर पावन करो। तो पतितपने मे सब कुछ आ गया। पतित मेहतर को कहा जाता है। सब कहते है पतित-पावन, तो जरूर पतित ठहरे नां। सन्यासी भी कहते है नां तो बोलो कौन कहते है कि तुम पावन हो? तुम तो पावन होने के लिये ही तो गंगा मे स्नान करने जाते हो। गंगा को पतित पावनी कहते हो। तुमने इस पर चित्र भी राईट बनाये है। पतित पावनी, पी, पी है यह नदियां है? ऐसे मत समझो कि सिर्फ गंगा को ही पतित पावनी कहते है नही। नदियां नाले तलाब जो कुछ भी होता है तीर्थ माना जाता है। उनमे ताजा पानी नही होता है। अमरतसर मे भी तलाब है। पानी भी सारा मैला हो जाता है। इसको ही वो लोग तो अमृत का तालाब समझते है। बडे-2 राजा लोग भी अमृत समझते है। जब साफ करते है तो जाकर राजा लोग भी हाथ डालते है। इसलिये ही नाम रखा है अमृतसर। अब अमृत तो गंगा जल को भी कहते है। पानी को ही कहते है। पानी इतना गन्दा हो जाता है कि बात मत पूछो। आगे तो देवियों को पूजा कर उनको पानी मे डूबो देते थे। अब तो कृष्ण को भी डुबोते है। यहां

की पुजा कर उनको भी डुबो दिया। बाबा का इन नदियों आद मे स्नान किया हुआ है। बहुत गन्दा पानी होता है। फिर उसकी मिटी उठा कर लगा देते है। बाबा अनुभवी तो है नां। शरीर भी पुराना अनुभवी ही लिया है। इन जैसा अनुभवी कोई नही होगा। बड़े-2 वायसराय किंगस आद से भी अनुभवी था। जुआ बाजरी भी बेचता था। बस चार छे आना कमाया तो खुशी हो जाती थी। अब तो देखो कहां चले गये। गोबरे का छोरा फिर क्या बनना है। बाप भी कहते है कि मै साधारन तन मे आता हूं। यह भी अपने जन्मो को नही जानते है। कैसे 84 वे पिछाडीह जन्म मे आकर गांव का छोरा बना वो बाप बैठ समझाते है। चरित्र नां ही कृष्ण के है नां ही किसी और के है। मटकी फोडी माखन खाया यह सब उसके लिय झूठ बोलते है। सब गपोडे है। भक्ति मार्ग मे तो गपोडो के हीशास्त्र बनाये है। सच्च कुछ भी है नही। तो बाप देखो कितनी सिम्पल बात बताते है कि मीठे-2 बच्चो उठते बैठते चलते फिरते जरूर मामेकम् याद करो। अपने को आत्म समझ बाप को याद करो। वो ही ऊंच ते ऊंच सब आत्माओं का बाप है। तुम समझते हो कि हम सब ब्रदर्स है। वो बाप है। सब हम उसकी ही याद मे रहते है। हे भगवान हे ईश्वर कहते है परन्तु जानते कुछ भी नही है। अब बाप ने परिचय दिया है ड्रामा के प्लान अनुसार। इसको ही गीता एपीसोड कहा जाता है क्योंकि बाप आकर ज्ञान सिखाते है। जिससे ही हम ऊंच ते ऊंच बनते है। ऊंच ते ऊंच भगवान को कहते है नां। आत्मा भी शरीर धारन कर फिर ही कार्य करती है। बाप को भी दिव्य आलौकिक कर्मकरना है तो वो भी आधार लेते है। आधा कल्प मनुष्य दुःखी होते है तो फिर बुलाते है। बाप कल्प मे एक ही बार आते है। तुम तो बार-2 पार्ट बजाने आते हो। आदी सनातन है ही देवी देवता धर्म। वो फाऊंडेशन अब है नही। उनके तो बाकी सिर्फ चित्र ही रह गयेहै। तो बाप भी कहते है कि तुमको यह ल-न बनना है। रेमः आः सामने खडी है। यही है आः सः देः देः धर्म। बाकी हिन्दु तो कोई भी धर्म ही नही है। हिन्दु तो हिन्दुस्तान का नाम है। जैसे सन्यासी रहने के स्थान ब्रहम को भगवान मान लेते हैवैसे ही यह भी फिर रहने के स्थान को धर्म मान लेते है। आदी सनातन कोई हिन्दु धर्म थोडेई है। हिन्दु तो देवताओं के आगे जाकर नम्र करते है। जो देवता थे वो ही हिन्दु बन गये है। धर्म-कर्म भ्रष्ट हो गये है। और सभी का धर्म कायम है। यह देवी देवता धर्म ही प्रायः लोप है। धर्म-कर्म भ्रष्ट होने कारण अपने को हिन्दु कहने लग गये है। आपही पुज्य थे फिर पुजारी बन देवताओं की पुजा करते है। अक्ल ही चट हो गया है। कितना समझाना पड़ता है। कृष्ण के लिय भी कितना समझाते है कि यह तो सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स था। तो जरूर 84जन्म भी शुरु इन्ही से होंगे नां। बाप कहते है कि बहुत जन्मो के अन्त के भी अन्त मे मै प्रवेश करता हूं। तो जरूर इसका हिसाब तो बतावेंगे नां। यह ल-न ही नम्बरवन मे आये है। तो जो पहले है वो ही लास्ट मे भी जावेंगे। सिर्फ एक कृष्ण ही तो नही था नां। और भी तो विष्णु वंशावली थी नां। इन बातो को तो तुम अच्छी रीती समझते हो। यही फिर भूल नही जाना है। अब म्यूजियम तो खुलते रहते है। बहुत खुल जावेंगे। बहुत लोग आवेंगे। जैसे मंदिरो मे जाकर माथा टेकते है नां। तुम्हारे पास भी ल-न का चित्र देखते है तो उनके आगे माथा टेकते है पैसे रखते हैं। तुम कहते हो कि यहां पर तो समझने की बाते है। पैसे रखने की बात नही है। अभी तुम शिव के मन्दिर मे जाओ तो पैसे रखोगे क्या? तुम तो जाओगे ही समझाने की रीत से। क्योंकि तुम इन सबकी जीवनकहानी को जानते हो। मन्दिर तो बहुत ही है। मुख्य तो है शिव का मन्दिर फिर वहां पर औरो-2 की मूर्ति या क्यो रखते है। सबके आगे ही पैसे रखते जावेंगे। सभी के अलग-2 पैसे हो जावेंगे। तो वो शिव परिवार का मन्दिर कहलावेगा। शिव बाबा ने यह परिवार स्थापन किया है। सच्चा परिवार तो तुम ब्राहमणो का ही है। शिव बाबा का परिवार तो सभी सालीग्राम है। फिर हम भाई-बहनो का परिवार बन जाता है। पहले तो भाई-2 ही थे। फिर बाप आते है तो भाई-बहन बनते है। फिर तुम सतयुग मे जाते हो तो वहां पर परिवार और वृधी को पाता है। वहां भी शादी आद होती है तो परिवार और भी वृधी को पाता है। घर मे अर्थात शान्तिः धाम मे रहते है तो हम भाई-2 है। फिर यहां पर प्रजापिता ब्रहमा की सन्तान

सन्तान भाई है। और कोई नाता नही है। फिर रावण के राज्य मे तो बहुत ही बुधी हो जाती है। बाप सब राज समझाते रहते है। फिर भी कहते है कि मीठे-2 रूहानी बच्चो को बाप को याद करो तो जन्मजन्म का पापो का जो सिर पर बोझा है वो याद से ही उतरेगा। पढाई से पाप नही कटेगे। यह तो रैडयूकेशन है। पवित्र बनना है तो बाप को याद करो। वो है मुख्य। इसलिये ही शुरु और अन्त मे बाप कहते है मनमनाभव। यह भी तुम समझते हो कि पावन होते ही है नई दुनियां मे। सतयुग मे ही कहेगे कि सम्पूर्ण पावन है। फिर कम-कम होते जाते है। इसको सेगी स्वर्ग कहेगे। सभी बाते तुम बच्चो की बुधी मे ही है। मनुष्यो को तो समझ मे ही नही आता है। तुम्हारा परिवार कितना बुधी को पाता जाता है। और सभी के भूलना पडे। तुम कहते भी थे कि बाबा आप आवेगे तो हम आपके ही बनेगे। बाप कहते है कि अब गृहस्थ व्यवहार मे रहते एक को याद करो। बाकी यही पर ही थोडे ही सबको बैठना है। डायरेक्शन लेकर चले जाना है। मोस्ट सिम्पल डायरेक्शनस है। बाप को याद करो। बाकी सारा दिन कोई यहां पर ही नही बैठता है। हथ कार डे, दिल यार डे। मुझे ही याद करने की प्रैक्टिस करो। इसमे ही बहुत मेहनत है। विश्व का मालिक बनना है। प्रजा तो बहुत होती है नां। वो तो बन बनती ही रहती है। और सब बाते छोड कर सभी को यही बोलो की बाप को याद करो। तुम जानते हो कि इस समय आत्मा तमोप्रधान है। इनको सतोप्रधान बनाना है। अन्त तक सिवाय एक बाप के और कोई भी याद नही आवे। वापस अपने घर बाप के पास जाना चाहते हो तो उनको ही याद करो। बाप की कहानी भी बता देते हो कि वो तो निराकार है। उनका फादर कोई नही है। यह तो बहुत ही गहीन बाते है। आत्मा भी कितनी सूक्ष्म है। सबसे सूक्ष्म ते सूक्ष्म छोटी से छोटी यह चीज है। एकदम ही छोटी बिन्दी है। बहुत वण्डर है। इसलिये ही बहुतो की बुधी मे तो यह बाते बैठती ही नही है। हम इतनी छोटी सी आत्मा है। इसमे ही 84का पार्ट भरा हुआ है। जो कि चक्र फिरता ही रहता है। बाकी गोश आद की तो कोई बात ही नही है। अभी तुम तो समझते हो कि हम कल्प-2 मालिक बनते है। फिर कंगाल बनते है। यह ड्रामा मे पार्ट नूंधा हुआ है। इस्लामी बोधी क्रिश्चन कब आते है यह सारी नालेज तुम्हारे बुधी मे है। बाकी लाखो वर्षों की तो कोई बात ही नही है। लाखो वर्ष की बात हो तो फिर सतोप्रधान बनने मे भी लाखो वर्ष ही लग जावे। यह तो बुधी से समझने की बाते है नां। बाप कहते है कि तुम कितने समझदार विश्व का मालिक थे। फिर कितने बेसमझ बन गये हो। वण्डर है कि तुम्हारे पास तो सब कुछ था। फिर कुछ भी नही रहा है। 16कला सम्पूर्ण थे। पुण्यात्मा से पापात्मा बने गये है। लेन-देन भी पापात्माओ से होते उतरते ही ओय है। अब जितना हो सके बाप को ही याद करते रहो। अपनी भी जांच करते रहो कि हम कहां तक तमोप्रधान से सतोप्रधान बने है? कहां तक अभी भी माया आती है। बाप ने बताया है कि माया की लडाई बडीकडी है। तुम भी समझते हो कि बेखबर माया बार-2 भुला देती है। इसको ही माया का तूफान कहा जाता है। यह तो नां चाहते हुये भी आवेगे। इसको ही युध कहा जाता है। छुपाना नही है। चिल्लाना नही है। युध करना है। कहते है कि बाबा कृपा करो आशीर्वाद करो। बाप तो कहते है कि इसमे कृपा आशीर्वाद आद की बात ही नही है। मै तो माया को कहता हूं कि इनको और भी जोर से थप्पड मारो। कृपा अपने पर आपही करनी है। बाप से थोडेई मांगनी है। अपने पर ही रहम करो। हमे तो सिर्फ रास्ता बतोन वाला हूं। उस पर ही चलो। मागने की बात ही नही है। अच्छा मीठे-2 सिकीलधे बच्चो को ... तुम ही 5000वर्ष के बाद आकर मिले हो। 5000वर्षों से ही तुम गुम हो गये थे। पहले तो अपने ही राज्य मे थे। तुम कहेगे कि हम तो अपने बाबा के अथवा ईश्वर के राज्य मे थे। फिर हम पुराने राज्य अथवा रावण के राज्य मे ओय है। बडी जोर से गिरे। गिरते-2 एकदम पतित बन गये है। अच्छा स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट बच्चो प्रति रूहानी बाप की याद प्यार और नमस्ते